Need for proper planning to check floods in North Eastern States-laid

श्री दिलीप शइकीया **(दारंग-उदालगुड़ी) :** प्रत्येक वर्ष उत्तर पूर्वी भारत में बाढ़ और भूस्खलन से लाखों लोग प्रभावित होते है और उन्हें जान-माल का नुकसान उठाना पड़ता है, हजारों हैक्टेयर फसल बर्बाद होती है, बहुत से लोगों व पशुओं को अपनी जान गवानी पड़ती है । इस साल भी बाढ़, भूस्खलन और तूफान से दरांग, कामरूप व कोकरा झार समेत 26 जिलों के 24 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए है । 50 हजार हेक्टेयर से ज्यादा की फसल भूमि जलमग्न हो गई है । काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान ने हाल के वर्षों में सबसे खराब बाढ़ देखी है, जिसके परिणामस्वरूप डूबने या बचाव कार्यों के दौरान 159 जंगली जानवरों की मौत हो गई है । इस भीषण बाढ़ के कारण यहाँ के बुनियादी ढांचे को भी बहुत नुकसान हुआ है, इस नुकसान मे 94 सड़कें, 03 पुल, 26 घर और छह तटबंध शामिल हैं । प्रदेश और केंद्र सरकार अपने स्तर पर बचाव कार्य कर रही है और लोगों तक मदद भी पहुंचा रही है, लेकिन मेरा केंद्र सरकार से अनुरोध है कि भारत के उत्तर-पूर्वी भाग को प्रत्येक वर्ष की भीषण बाढ़ से बचाने के लिए किसी कार्य योजना पर विचार करे और बड़े पैमाने पर ठोस कदम उठाए जाएँ ।